

भूलों को भूलें, मौज में झूलें

- ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा



नई दिल्ली। रेल मंत्री सुरेश प्रभु को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी। साथ है ब्र.कु. सविता।



फरीदाबाद। पूर्व मुख्य संसदीय सचिव श्रीमति सीमा त्रिखा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कौशल्या।



दिल्ली-बवाना। बवाना चेम्बर ऑफ इंडस्ट्रीज़ में चेयरमैन प्रकाश चन्द जैन व स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. चन्द्रिका व ब्र.कु. लीला।



धुरी-पंजाब। डी.एस.पी. सरदार आकाशदीप को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु.मूर्ति बहन, सिटी एस.एच.ओ. गुरमीत सिंह, सरदार एस. एच.ओ. विजय कुमार, मदनलाल वर्मा, मुकेश कंसल तथा अन्य।



फाज़िल्का-पंजाब। सुलेमानी बॉर्डर पर (90 बटालियन) के जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में कमाण्डर मुरारी प्रसाद सिंह, जज परमिंदर कौर, ब्र.कु. प्रिया तथा अन्य।



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। बैंक मैनेजर परविंदर जी, बैंक ऑफ बड़ौदा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शकुन्तला बहन।

आज मनुष्य बोझों से लदकर अपना जीवन जी रहा है। मन को बोझिल या उलझा हुआ अनुभव करना या परिस्थितियों का सामना न कर पाना, ऐसे कई सांसारिक, व्यावहारिक या पारिवारिक व सामाजिक बोझ को ढोते हुए जैसे थका सा महसूस करता है, जैसे तैसे जीवन काट रहा होता है। ये सब मन की कमजोरियों का ही परिणाम है। उसे वो जानता तो है कि ये चीज़ मन को भारी कर रही है, फिर भी छोड़ नहीं पाता। ऐसे में हमें क्या चाहिए, और क्या करना है जो हमारे जीवन में सफलता मिले? वैसे तो बहुत सारी चीज़ें हैं, लेकिन उसमें से एक मन के बोझ को हल्का कर सकते हैं। आज हम ऐसी बात पर आपका ध्यान आकर्षित कराना चाहते हैं जो कि हमारे हाथ में है। यदि हम थोड़ी सी समझदारी से इस पर गौर करें तो इस जीवन की यात्रा में बोझ को कम कर सकते हैं।

पूर्व स्मृतियों को करें समाप्त

हमारे मन में दूसरे की बुराइयों, कमियों, कमजोरियों, दुर्व्यवहार, दुश्चेष्टाओं इत्यादि की स्मृति बनी रहती है। एक बार किसी के बारे में कोई छाप मन पर पड़ जाती है तो वह भूलती नहीं है। वह व्यक्ति बदल जाता है परन्तु उसके बारे में वह छाप मिटाना हमारे लिए असम्भव या मुश्किल होता है। वह हमारी दृष्टि, वृत्ति और कृति को बिगाड़ता है। ईश्वरीय स्मृति में स्थिति प्राप्त करने में भी वह निकृष्ट स्मृति बाधक होती है। उस व्यक्ति ने यदि किसी बुरे संस्कार के वशीभूत होकर हमसे कुछ दुर्व्यवहार भी किया था तो हम उसे क्षमा नहीं दे पाते। हम उसकी भूल को अपने मन को पीड़ित करने वाला शूल या त्रिशूल बना देते हैं। उसकी बुराई हमारे मन में उसके प्रति घृणा, द्वेष, नाराज़गी इत्यादि के भाव जागृत करती रहती है। अतः हमें ऐसी शक्ति की ज़रूरत है कि हम किसी की बुराई को भुला दें और उसे अपने मन ही मन में क्षमा कर दें। भुलाने और क्षमा करने की शक्ति के बिना हमारा मन उज्ज्वल और हल्का नहीं हो सकता। यदि हम भुलायेंगे नहीं तो क्षमा भी नहीं कर सकेंगे और यदि क्षमा नहीं

करेंगे तो भुला भी नहीं सकेंगे और यदि भुला नहीं सकेंगे तो हमारी ईश्वरीय स्मृति में निखार आयेगा ही नहीं और सुख-चैन की नींद ले भी नहीं सकेंगे। इसलिए हममें स्वाभाविक रूप से भुलाने की क्षमता तो है परन्तु उलट चाल के कारण वह क्षमता कमजोर हो गयी है। अब उसपर ध्यान देकर अभ्यास करना ज़रूरी है।

क्षमा करके मन को करें निर्मल

सांसारिक दृष्टि से किसी ने भी अक्षम्य अपराध अथवा व्यवहार भी किया हो तो भी महान व्यक्ति की शोभा इसी में है कि क्षमा करने की शक्ति धारण करे। क्षमा न कर सकना एक बहुत बड़ी



कमजोरी है। परन्तु केवल दूसरों को ही क्षमा करना पर्याप्त नहीं है बल्कि हमने यदि कुछ अनिष्ट, अयुक्त, अमर्यादित अथवा अभद्रतापूर्ण व्यवहार किया है तो हमें भी दूसरों से उसके लिए क्षमा मांगनी चाहिए अथवा खेद प्रकट करना चाहिए वरना ना तो देह-अभिमान हटेगा और ना ही बुरा करने की आदत टलेगी। हमें यह भी नहीं सोचना चाहिए कि गलती मानने से तो दूसरा व्यक्ति हमारे सिर पर चढ़ जायेगा और इस बात का ढिंढ़ोरा पीटता फिरेगा कि हमने अपनी गलती मानी है या मानी थी और माफ़ी मांगी थी। हमें अपने उत्कर्ष के लिए और सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार के संकोच छोड़ देने चाहिए। फिर भी, यदि कोई व्यक्ति निश्चित रूप से ऐसा है कि वह हमारी क्षमा याचना का अनुचित लाभ लेकर हमारे लिए कार्य कठिन कर देगा तो वाणी में न सही, हाव-भाव तो हमें ऐसा प्रकट करना ही चाहिए कि हम अपनी भूल मानते हैं या अमर्यादा के लिए पछताते हैं।

बोझ उतारने से ही उतरेगा

यदि हम किसी भी ठीक युक्ति से क्षमा भाव प्रगट नहीं करेंगे और प्रायश्चित भी नहीं करेंगे तो हमारा मन निर्मल कैसे होगा? विकारों की मैल कैसे छूटेगी? यदि क्षमा करके मन से बोझ नहीं उतारेंगे तो हम उड़ती कला को कैसे प्राप्त होंगे? हरेक ने ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, शत्रुता, मनमुटाव, स्वार्थ इत्यादि निकृष्ट भावों के वशीभूत होकर दूसरों को हानि पहुँचायी तो है, दुर्व्यवहार किया तो है, उनकी निंदा-चुगली की तो है, उन्हें पीछे धकेलकर अपने आगे के लिए ज़बरदस्ती स्थान बनाया तो है, दूसरों को उनके उचित अधिकारों से वंचित किया तो है, और अन्याय, अभद्रता तथा अनीति का व्यवहार किया तो है। यह सब न सही, आखिर कोई तो बेदुंगी चाल चली है। तब क्या किसी दिन क्षमा मांगकर छुट्टी पाने की बजाय हम इस टूकभर बोझ को छाती पर लिये रहेंगे? क्या यहाँ ही हल्का होने की बजाय धर्मराज के दण्ड-महादण्ड से प्रचण्ड पीड़ा भोगकर ही हल्के होंगे? इससे तो गधा भला जो ढैचू-ढैचू कर तुरंत माफ़ी लेता है या भविष्य में अकर्तव्य न करने की घोषणा करता है। धर्मराज की कचहरी में तो ज़मानत होती नहीं कि कोई हमें छुड़ा लायेगा। वहाँ किसी राजनैतिक नेता की सिफारिश भी काम करती नहीं। अतः दूसरों की बुराई मन से भुलाने, अपनी बुराई के प्रति क्षमाभाव प्रगट करने के लिए 'भुलाने और क्षमा करने की शक्ति' को धारण करना चाहिए। यह शक्ति हममें तभी आयेगी जब हम सभी के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखेंगे। उसके बिना यह शक्ति नहीं आयेगी।

यदि क्षमा कहने से मन का कीचड़ धुलता है, यदि बुराई भुलाने से मन का मैल धुलता है। तो क्या यह कम है कि ईश्वर का साथ मिलता है, सबकी दुआ मिलती है, फूल किस्मत का खिलता है!



छपरा-बिहार। वन परिक्षेत्र अधिकारी एम.आर. उईके को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रामेश्वरी।



दिल्ली-पालम कॉलोनी। आर्मी बेस अस्पताल में मरीज भाई बहनों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरोज।



नवरंगपुर-ओडिशा। आई.ए.एस. रश्मिता पण्डा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नमिता।